The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN:3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का उनके पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन

करुना देवांगन[1]
शोधकर्ता, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. एन. पापा राव [2]
शोधनिर्देशक, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा), स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर-7, बिलासपुर नगर

ARTICLEDETAILS

Research Paper
Received: ***01.06.25***
Accepted: ***09.06.25***
Published: ***30/06/25***
Keywords: ***पाठ्य–सहगामी, बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का व्यक्तित्व,क्रियाओं के प्रतिअभिवृत्ति***

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्यदुर्ग जिलें के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का उनके पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु न्यादर्श के रुप में छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के शिक्षण संस्थान के द्वितीय वर्ष के कला एवं विज्ञान विषय के 800 (400–महिला, 400–पुरुष) बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का चयन गैर–अनुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया है। व्यक्तित्व मापन हेतु डॉ. के.एस. मिश्रा द्वारा निर्मित पांच व्यक्तित्व विशेषता सूची (2005) का प्रयोग किया गया है तथा पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 3वें एनोवा का प्रयोग किया गया है। शोध के निष्कर्ष से पता चलता है कि बी. एड. प्रशिक्षार्थियों के केवल व्यक्तित्व का प्रभाव पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ता है, जबकि लिंग एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अर्थात उच्च व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति निम्न व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति से अधिक होती है।

प्रस्तावना :—वर्तमान का युग ज्ञान का विस्फोटक युग है इस युग में अनेक प्रकार के वैज्ञानिक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं जिनसे मानव मन में जिज्ञासा और अविष्कारशीलता जागृत हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नए—नए प्रयोग व नए—नए अनुसंधान हो रहे हैं इस प्रयोग से प्राप्त अनुभवों के आधार पर हम कह सकते हैं कि किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है बल्कि सीमित है। इन सीमित ज्ञान व अनुभवों को बढ़ाने का भरसक प्रयास करना चाहिए क्योंकि अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा है कि ''सबसे बड़ी ताकत आपके भीतर है।'' अतः शिक्षा को हथियार बनाकर व शिक्षा रूपी नींव के आधार पर हम समाज में सम्मान प्राप्त करते हैं तथा दुनिया को बदलने का जुनून रखते हैं।

प्राचीन काल में व्यक्तित्व से आशय किसी व्यक्ति के शारीरिक संरचना रंगरूप वेशभूषा इत्यादि से लगाया जाता था। जो व्यक्ति अपने बाह्य गुणों से जितना अधिक अन्य लोगों को प्रभावित करता है उसका व्यक्तित्व उतना ही अधिक प्रभावी माना जाता है, किन्तु व्यक्तित्व के निर्धारण में केवल एक ही कारक महत्वपूर्ण नहीं होते बल्कि अनेक कारकों का योग होता है जिससे व्यक्तित्व परिलक्षित होता है। तदन्तर यह स्वीकार किया जाने लगा कि व्यक्तित्व का तात्पर्य किसी एक निश्चित विशेषताओं से नही वरन् व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विशेषताओं से है। मार्क्स(1976)। अनेक मनोवैज्ञानिकों का व्यक्तित्व के बारे में अलग—अलग मत है। व्यक्तित्व की प्रकृति के संबंध में मतभिन्नता है। मिश्चेल(1976)।

ऑलपोर्ट के अनुसार :—''व्यक्तित्व व्यक्ति के उन समस्त मनोशारीरिक तन्त्रों का वह आंतरिक गत्यात्मक संगठन है जो कि पर्यावरण में उसके अपूर्ण समायोजन को निर्धारित करता है।''

पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्तिसे तात्पर्य पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण या सकारात्मक अभिवृत्ति अपनाने से है। पाठ्य—सहगामी क्रियाएं विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में आयोजित की जाने वाली ऐसी क्रियाएं है जिनका आयोजन विद्यार्थियों के सैद्धांतिक विषयों के साथ—साथ सर्वांगीण विकास हेतु किया जाता है। पाठ्य—सहगामी क्रियाएं सैद्धांतिक विषयों से भिन्न होता है, लेकिन इन क्रियाओं का मूल उद्देश्य

सैद्धांतिक विषयों में शामिल उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करना होता है। पाठ्य–सहगामी क्रियाएं पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका मूल और आधारभूत उद्देश्य शैक्षणिक विषयों के नियमित शिक्षण को छोड़कर विद्यार्थियों और शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के चरित्र और व्यक्तित्व को प्रशिक्षित करना है।

केदारनाथ के अनुसार :–''पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को ऐसी क्रियाओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो मुख्य विषयों के पूरक अथवा भाग के रूप में होते है। यह किसी भी संस्थान के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

संबंधित शोध अध्ययन :–

व्यक्तित्व से संबंधित शोध अध्ययन :–

नागपाल (2020). ने बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में पंजाब राज्य के शिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत् 1000 शिक्षक प्रशिक्षार्थियों (692 महिला और 308 पुरूष) का चयन सरल यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। उपकरण के रूप पौल टी. कोष्टा एवं राबर्ट आर. मेकरों (1992) द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग व्यक्तित्व मापन के लिए किया गया तथा सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण तथा सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

गोजडे एवं अन्य (2022). ने सेवा–पूर्व अध्यापकों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति और व्यक्तित्व लक्षणों के उनके प्रेरणाओं पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में तुर्की के अंकारा राज्य के विश्वविद्यालय में शिक्षक संकाय के 712 सेवा–पूर्व अध्यापकों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में व्यक्तित्व मापन हेतु बिग फाइव इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए पदानुक्रमित प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि सेवा–पूर्व अध्यापकों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति और व्यक्तित्व लक्षणों का उनके प्रेरणाओं पर सार्थक

प्रभाव पड़ता है।

पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अध्ययन :–

सिंग (2017). ने शिक्षक प्रशिक्षार्थियों का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में अहमदाबाद के शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय से 299 शिक्षक प्रशिक्षार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। उपकरण के रूप में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया । सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया, अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि महिला एवं पुरूष प्रशिक्षार्थियों का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विजेसुन्दरा (2022). ने स्कूल के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं पर शिक्षक प्रशिक्षार्थियों केअभिवृत्ति पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में श्रीलंका के प्राइवेट शिक्षण संस्थान से 97 शिक्षक प्रशिक्षार्थियों का चयन किया। पाठ्य–सहगामी क्रियाओं पर दृष्टिकोण को मापने के लिए शोधकर्ता ने स्वनिर्मित मापनी का निर्माण किया। अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षार्थियों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति सकारात्मकअभिवृत्ति विकसित किया है। और वे पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को समान महत्व देते हैं।

व्यक्तित्व एवं पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अध्ययन :–

कुमार एवं आरोकीआसाम्य (2012). ने पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के मनोवैज्ञानिक मूल्य धारणा पर माता–पिता का प्रभावः उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के व्यक्तित्व गुणों में सुधार के साथ इसके संबंध पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में केरल के तिरुअनंतपुरम के उच्च माध्यमिक विद्यालय के 1000 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। उपकरण के रूप में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के मापन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित

परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा व्यक्तित्व गुणों के लिए मंजू रानी अग्रवाल द्वारा निर्मित प्रमाणिक परीक्षण का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए एनोवा का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के मनोवैज्ञानिक मूल्य धारणा पर माता–पिता का नकारात्मक प्रभाव तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के चयनित व्यक्तित्व लक्षणों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व, लिंग तथा विषय का अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व, लिंग एवं विषय का मुख्य तथा अंतःक्रियात्मक सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

न्यादर्श :–

शोध अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के द्वितीय वर्ष के कला एवं विज्ञान विषय के 800 बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का चयन गैर–अनुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरणः–

व्यक्तित्व मापन हेतु डॉ. के.एस. मिश्रा द्वारा निर्मित पांच व्यक्तित्व विशेषता सूची (Five Personality Frait Inventory) (2005) का प्रयोग किया गया है।

पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्किीय विश्लेषण :–

सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 3वें एनोवा का प्रयोग किया गया है।

परिणाम :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आश्रित चर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर

व्यक्तित्व, लिंग एवं विषय के मुख्य तथा अंत:क्रियात्मक प्रभाव के अध्ययन हेतु 2x2x2 फेक्टोरियल डिजाइन का प्रयोग किया गया है। प्रसरण के विश्लेषण के परिणाम नीचे दी गई तालिका क्रमांक–1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक–1

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व, लिंग एवं विषय का मुख्य तथा अंत:क्रियात्मक प्रभाव

प्रसरण का स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि (df)	वर्गों का मध्यमान	F मान
व्यक्तित्व	4054.114	1	4054.114	28.929*
लिंग	8.016	1	8.016	0.057 NS
विषय	28.502	1	28.502	0.203 NS
व्यक्तित्व x लिंग	15.871	1	15.871	0.113 NS
व्यक्तित्व x विषय	321.499	1	321.499	2.294 NS
लिंग x विषय	119.821	1	119.821	0.885 NS
व्यक्तित्वx लिंग x विषय	320.427	1	320.427	2.286 NS
त्रुटि	110992.266	792	140.142	
योग	10839539.000	800		
संबंधित योग	116690.049	799		

* 0.01 स्तर पर सार्थक, NS सार्थक नहीं।

Corresponding Author: karuna.dewangan84@gmail.com

- **व्यक्तित्व का पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव का F मान 28.929, P<0.01प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर व्यक्तित्व का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक मुख्य प्रभाव पाया गया। इसकी पुष्टि हेतु उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया।

तालिका क्रमांक–2

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के मुख्य प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

व्यक्तित्व	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
उच्च	659	116.81	11.17
निम्न	141	110.91	12.39

तालिका क्रमांक–2 के अवलोकन के अनुसार उच्च व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 116.81 तथा प्रमाणिक विचलन 11.77 तथा निम्न व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 110.91 तथा प्रमाणिक विचलन 12.39 प्राप्त हुआ।

अतः यह कहा जा सकता है कि उच्च व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति निम्न व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति से अधिक पाया गया।

- **लिंग का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि लिंग का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव का F मान 0.057, P>0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।
प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर लिंग का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया।

- **विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव का Fमान 0.203, P>0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।
प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया।

- **व्यक्तित्व एवं लिंग का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व एवं लिंग का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का Fमान 0. 113, P>0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।
प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर व्यक्तित्व एवं लिंग का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।

- **व्यक्तित्व एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का Fमान 2. 294, P>0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर व्यक्तित्व एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया।

- **लिंग एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि लिंग एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का Fमान 0. 855, P>0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर लिंग एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।

- **व्यक्तित्व, लिंग एवं विषय का पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव :–**

तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व, लिंग एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का Fमान 2.286, P>0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

प्रसरण के विश्लेषण तालिका क्रमांक–1 के अवलोकन के आधार पर व्यक्तित्व, लिंग एवं विषय का पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक

अंतःक्रियात्मक पभाव नहीं पाया गया।

निश्कर्श :—प्राप्त परिणामों से पता चलता है कि केवल व्यक्तित्व का प्रभाव पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ता है। उच्च व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति निम्न व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति से अधिक होती है तथा लिंग एवं विषय का पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

भौक्षिक महत्व :—

- ❖ यह अध्ययन विद्यार्थियों को स्वरोजगार के अवसर तथा आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा।
- ❖ यह अध्ययन विद्यार्थियों के व्यवसाय विकल्पों को बढ़ाने में सहायक होगा।
- ❖ यह अध्ययन हमारे देश को उच्च कोटि के मेधावी छात्र प्रदान करेंगे।यह अध्ययन शिक्षकों व प्रशिक्षकों को निर्देशन प्रदान कर सकेंगे।
- ❖ यह अध्ययन विद्यार्थियों को पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अच्छी आदतों का अनुकरणीय व्यवहार प्रदर्शित करने में सहायक होगा।
- ❖ यह अध्ययन विद्यार्थियों को अवसाद से मुक्ति दिलाने में सहायक होगा जिससे वे तनाव का शिकार नहीं होंगेतथा विद्यार्थियों में आत्महत्या की दर घटेगी।
- ❖ यह अध्ययन उच्च व निम्न व्यक्तित्व वाले शिक्षकों व बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के पहचान करने व सुधार करने में सहायक होगा।
- ❖ यह अध्ययन योग्य व उच्च व्यक्तित्व वाले शिक्षकों व बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के चयन में सहायक होगा।
- ❖ यह अध्ययन देश को योग्य व उच्च कोटि के उच्च व्यक्तित्व वाले शिक्षक प्रदान में सहायक होगा।

- ❖ यह अध्ययन निम्न व्यक्तित्व वाले शिक्षकों व बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के व्यक्तित्व में सुधार करने में सहायक होगा।
- ❖ यह अध्ययन शिक्षकों के जीविकोपार्जन हेतु संतोषप्रद आय प्रदान करने में सहायक होगा।

संदर्भित ग्रंथ सूची :–

1. Gozde, Y.; Funda, E.; Huseyin, A. and Basri, A. (2022). Investigation of the effects of Pre-service teachers socio-economic status and personality traits on their motivation. *Participatory Educational Research, 9*(6), 312-324. https://eric.ed.gov/?q=Effect+of+personality+dimension+of+teacher+trainees+&id=EJ1356413
2. Kumar, G. N. S., and Arokiasamy, S. (2012). Parental influence perception of co-curricular activities: its link with improving personality trait of higher secondary students. *Journal Of Education Psychology, 6*(1), 45-52, 0973-8827.
3. Nagpal, S. (2020). The impact of personality on academic achievement of B.Ed. teacher trainees. *International Journal of Science and Research, 9*(7), 2319-7064, www.ijsr.net, https://dx.doi.org/10.21275/SR20720090241.
4. Singh, C. J. (2017). Attitude of teacher trainees towards co-curricular activities. *International Educational Journal CHETAN, 2*(1), 114-125, 2455-8729, www.echetana.com.
5. Wijesundara, G. (2022). Trainee teachers' perspectives co-curricular activities at school. *Proceeding Of the International Open University Research Session (IOURS2022),* 2012-9912.